Krishna Nand B.A I Hon's ① मनोविदलता
5 (continue)

मनोविदलता के कारण (Etiology of schizophrenia) - मनोविदलता के कारणों के संबंध में मनोविज्ञानी एक मत नहीं हैं। मनोविदलता के कारणों की व्याख्या करने के लिए कई तरह के विचार धाराएं उपलब्ध हैं ~~जिन्हें~~ जिन्हें निम्नांकित तीन भागों में बांट का अध्ययन किया जाना समीचीन होगा—

(A) जैविक कारक :— जैविक कारकों को मनोवैज्ञानिकों द्वारा दो भागों में बांट का अध्ययन किया गया है—

(a) जननिक कारक (Genetic factors) :— कुछ व्यक्तियों में मनोविदलता कारण एक जैविक पूर्ववृत्ति (Biological predisposition) का जन्म से होता है। जब ऐसी पूर्ववृत्ति वे अपने माता-पिता प्राप्त करते हैं और डायथिसिस तनाव मॉडल (Diathesis stress model) के अनुसार जब भी ऐसे लोगों को किशोरावस्था में अत्यधिक तनाव का सामना करना पड़ता है तो उनमें वह पूर्ववृत्ति विकसित होकर मनोविदलता का रूप ले लेती है। इस व्याख्या के समर्थन में गॉटेसमैन (Gottesman, 1991) तथा होल्जमैन एवं मैथीसी (Holtzman & Matthysse, 1990) द्वारा व्यापक अध्ययन निम्नांकित चार प्रकार से किया गया और निष्कर्ष उपरोक्त विचार धारा के समर्थन में पाया गया—

(I) मनोविदलता के रोगियों के संबंधियों का अध्ययन
(II) ऐसे जुड़वाँ बच्चे जो मनोविदलता के रोगी रहे हों।
(III) मनोविदलता के ऐसे रोगी जो दत्तक रहे हों
(IV) गुणसूत्रीय मैपिंग।

इसको आधार मानकर वंशपरम्परा को मनोविदलता का एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है।

(b) जैविक कारक (Biological factors)—

Krishna Nand B.A I Hons (2) मनोविदलता
continue

मनोविदलता उत्पन्न करने में दो प्रकार के जैविक कारकों का ~~मनोवैज्ञानिक~~ जैविक शोधों द्वारा पता चला है —

(i) जैव रसायन असामान्यताएँ (Biochemical abnormalities) — इस क्षेत्र में किए गए जैविक शोधों से यह ज्ञात हुआ है कि मनोविदलता के रोगियों में वे न्यूरोन जो डोपामाइन नामक न्यूरोट्रांसमीटर का उपयोग करते हैं, बहुत जल्द ही उत्तेजित हो जाते हैं और जरूरत से ज्यादा सूचनाओं का संचरण करते हैं। फलतः सूचना संचरण की अधिकता से मनोविदलता विकृति का लक्षण उत्पन्न हो जाता है। इसे डोपामाइन प्राक्कल्पना की संज्ञा मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई है। इस प्राक्कल्पना के अनुसार मनोविदलता का संबंध डोपामाइन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर से होने का प्रमाण मनोविदलता विरोधी औषधों के उपयोग से साबित हुआ है। फिनोथियाजाइन्स इसी श्रेणी की औषधि है जिसके लेने से डोपामाइन का निकलना काफी कम हो जाता है क्योंकि यह डोपामाइन ग्राहकों को प्रतिबंधित तथा अवरुद्ध करता है। शोधकर्ताओं द्वारा वास्तविक के कई तरह के डोपामाइन ग्राहकों की पहचान की गयी और पाया गया कि फिनोथियाजाइन्स से विशेष तरह के डोपामाइन ग्राहक जिसे "डी-टू-ग्राहक" (D-2-Receptor) कहा जाता है, अधिक प्रतिबंधित होता है।

(ii) असामान्य मस्तिष्कीय संरचना (Abnormal brain structure) —
सर्व प्रथम क्रेपलिन द्वारा यह दावा किया गया था कि मनोविदलता का कारण असामान्य मस्तिष्कीय संरचना होता है। आधुनिक मनोरोग-विज्ञानियों, जिनमें स्ट्रेंज (Strange, 1992)